म.प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
सा विद्या या विमुक्तये

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
मध्य प्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

TESS India

भाषा और साक्षरता

बोलना और सुनना

भारत में विद्यालय समर्थित शिक्षक शिक्षा

www.TESS-India.edu.in

http://creativecommons.org/licenses/

The Open University

UKaid from the British people

एस.आर.मोहन्ती
अपर मुख्य सचिव

अ.शा.पत्र क्र R.S.K/10
दूरभाष कार्यालय - 0755-4251330
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग
मंत्रालय, वल्लभ भवन, भोपाल-462 004
भोपाल, दिनांक 20-1-2016

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

बच्चों की शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण और रोचक बनाने के लिए स्कूल शिक्षा विभाग निरन्तर प्रयासरत् है। आप सभी के प्रयासों से शिक्षकों के शिक्षण कौशल में भी निखार आया है और शालाओं में कक्षा शिक्षण भी आंनददायी तथा बेहतर हुआ है।

इसी दिशा में शिक्षकों को बाल केन्द्रित शिक्षण की ओर उन्मुख करने और शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्देश्यों को लेकर, TESS India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) का विकास किया गया हैं। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता व सुगमतापूर्वक किया जा सकता है। आशा है कि ये संसाधन, शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन और क्षमतावर्द्धन में लाभकारी और उपयोगी सिद्ध होंगे।

राज्य शिक्षा केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में TESS India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया गया हैं। आशा है इन संसाधनों के उपयोग से प्रदेश के शिक्षक और शिक्षक प्रशिक्षक लाभान्वित होंगे और कक्षाओं में पठन पाठन को रूचिकर और गुणवत्तायुक्त बनाने में मदद मिलेगी।
शुभकामनाओं सहित,

(एस.आर.मोहन्ती)

दीप्ति गौड मुकर्जी
आयुक्त
राज्य शिक्षा केन्द्र एवं
सचिव
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग

अर्द्ध शा. पत्र क्र. : 8
दिनांक : 12-1-16
पुस्तक भवन, बी-विंग
अरेरा हिल्स, भोपाल-462011
फोन : (का.) 2768392
फैक्स : (0755) 2552363
वेबसाइट : www.educationportal.mp.gov.in
ई-मेल : rskcommmp@nic.in

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

सभी बच्चों को रूचिकर और बाल केन्द्रित शिक्षा उपलब्ध हो इसके लिए आवश्यक है कि हमारे शिक्षकों को शिक्षण की नवीनतम तकनीकों और शिक्षण विधियों से परिचित कराया जाए साथ ही इन तकनीकों के उपयोग के लिए उन्हे प्रोत्साहित भी किया जाए। TESS India द्वारा तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) के उपयोग से शिक्षक शिक्षण प्रविधि के व्यावहारिक उपयोग को सीख सकते हैं। इनकी सहायता से शिक्षक न केवल विषय वस्तु को सुगमता पूर्वक पढ़ा सकते हैं बल्कि पठन पाठन की इस प्रक्रिया में बच्चों की अधिक से अधिक सहभागिता भी सुनिश्चित कर सकते हैं।

राज्य शिक्षा केन्द्र स्कूल शिक्षा विभाग ने स्थानीय भाषा में तैयार किये गये इन मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को अपने पोर्टल www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया है।

आशा हैं, कि आप इन संसाधनों का कक्षा शिक्षण के दौरान नियमित रूप से उपयोग करेंगे और अपने शिक्षण कौशल में वृद्धि करते हुए बच्चों की पढ़ाई को आनंददायक बनाने का प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

(दीप्ति गौड मुकर्जी)

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

टेस–इण्डिया स्थानीयकृत ओईआर निर्माण में सहयोग

मार्गदर्शन एवं समीक्षा :
श्रीमती स्वाति मीणा नायक, अपर मिशन संचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एच. के. सेनापति, प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. ओ.पी.शर्मा, अपर संचालक, मध्यप्रदेश एससीईआरटी
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
प्रो.जयदीप मंडल, विभागाध्यक्ष विज्ञान एवं गणित शिक्षा संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आर. रायजादा, सहप्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष विस्तार शिक्षा, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. वी.जी. जाधव, से.नि. प्राध्यापक भौतिक, एनसीईआरटी
डॉ. के. बी. सुब्रमण्यम से.नि. प्राध्यापक गणित, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आई. पी. अग्रवाल से.नि. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. अश्विनी गर्ग सहा. प्राध्यापक गणित संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. एल. के. तिवारी, सहप्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री एल.एस.चौहान, सहा. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. श्रुति त्रिपाठी, सहा. प्राध्यापक अंग्रेजी, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. रजनी थपलियाल, व्याख्याता अंग्रेजी, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. मधु जैन, व्याख्याता शास. उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल
डॉ. सुशोवन बनिक, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. सौरभ कुमार मिश्रा, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री. अजी थॉमस, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. राजीव कुमार जैन, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
स्थानीयकरण :
भाषा एवं साक्षरता
डॉ. लोकेश खरे, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एम.एल. उपाध्याय से.नि. व्याख्याता शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय मुरैना
श्री रामगोपाल रायकवार ,कनि. व्याख्याता, डाइट कुण्डेश्वर, टीकमगढ़
डॉ. दीपक जैन अध्यापक, शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय क्र 1 टीकमगढ़
अंग्रेजी
श्री राजेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्रीमती कमलेश शर्मा. डायरेक्टर , ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री हेमंत शर्मा, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री मनोज कुमार गुहा वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी. मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एफ.एस.खान, वरि.व्याख्याता, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान (आईएएसई) भोपाल
श्री सुदीप दास, प्राचार्य, शास.उ.मा.विद्यालय दालौदा, मन्दसौर
श्रीमती संगीता सक्सेना, व्याख्याता, ,शास.कस्तूरबा कन्या उ.मा.विद्यालय भोपाल
गणित
श्री बी.बी. पी. गुप्ता, समन्वयक गणित, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ए. एच. खान प्राचार्य शास.उ.मा.विद्यालय रामाकोना, छिंदवाड़ा
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद गुप्त , प्राचार्य शास. जीवाजी ऑब्जर्वेटरी उज्जैन
डॉ.आर,सी. उपाध्याय, वरि. व्याख्याता, डाइट, सतना
डॉ. सीमा जैन, व्याख्याता, शास. कन्या उ.मा.विद्यालय गोविन्दपुरा, भोपाल
श्री सुशील कुमार शर्मा, शिक्षक, शास. लक्ष्मी मंडी उ.मा.विद्यालय, अशोका गार्डन, भोपाल
विज्ञान
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
डॉ. सुसम्मा जॉनसन, व्याख्याता एस.आई.एस.ई. जबलपुर मध्यप्रदेश
डॉ.सुबोध सक्सैना, समन्वयक एससीईआरटी मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री अरूण भार्गव, वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्रीमती सुषमा भट्ट, वरि.व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ब्रजेश सक्सेना, प्राचार्य, एससीईआरटी ,मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. रेहाना सिद्दकी से.नि. व्याख्याता सेन्ट फ्रांसिस हा. से. स्कूल भोपाल

*TESS-India (*विद्यालय समर्थित शिक्षक शिक्षा*)* का उद्देश्य मुक्त शैक्षिक संसाधनों की सहायता से भारत में प्रारंभिक और सेकेण्डरी शिक्षकों के कक्षा अभ्यास व कक्षा निष्पादन को सुधारना है जिसमें वे इन संसाधनों की सहायता से विद्यार्थी-केंद्रित, सहभागी दृष्टिकोणों का विकास कर सकें। टेस इंडिया के मुक्त शैक्षिक संसाधन शिक्षकों के लिए स्कूल पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त,सहयोगी पुस्तिका या संसाधन की तरह हैं। इसमें शिक्षकों के लिए कुछ गतिविधियां दी गई हैं जिन्हे वे कक्षाओ में विद्यार्थियों के साथ प्रयोग में ला सकते हैं, इसके साथ साथ कुछ केस स्टडी दी गई हैं जो यह बताती हैं कि कैसे अन्य शिक्षकों ने पाठ्य विषय को कक्षाओं में पढ़ाया और अपनी विषय संबंधी जानकारियों को बढ़ाने तथा पाठ योजनाओं को तैयार करने में संसाधनों का उपयोग किया।

TESS-India OER भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार किये गये है और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट रूप में उपयोग के लिए उपलब्ध हैं *(http://www.tess-india.edu.in)*। *OER* कार्यक्रम से जुड़े प्रत्येक भारतीय राज्य के शिक्षकों के उपयोग के लिए उपयुक्त तथा कई संस्करणों में उपलब्ध हैं तथा शिक्षक व उपयोगकर्ता इन्हे अपनी स्थानीय आवश्यकताओं और सन्दर्भो के अनुरूप इनका स्थानीय करण करके उपयोग कर सकते हैं।

प्रस्तुत संस्करण मध्यप्रदेश की स्थानीय आवश्यकताओं और संदर्भो को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

वीडियो संसाधन

इस इकाई में कुछ गतिविधियों के साथ यह आइकॉन (संकेत) दिया गया है*:* *.* इसका अर्थ है कि आप उक्त विशिष्ट विषयवस्तु या शैक्षणिक प्रविधि को और अधिक समझने के लिए *TESS-India* के वीडियो संसाधनों की मदद ले सकते हैं।

TESS-India वीडियो ससांधन (Resources) भारतीय परिप्रेक्ष्य में कक्षाओं में उपयोग की जा सकने वाली सीखने–सिखाने की विविध तकनीकों को दर्शाते हैं। हमें यकीन है कि इनसे आपको इसी प्रकार की तकनीकें अपनी कक्षा में करने में मदद मिलेगी। यदि इन वीडियो संसाधनों तक आपकी पहुँच नहीं हो तो कोई बात नहीं। यह वीडियो पाठ्यपुस्तक का स्थान नहीं लेते, बल्कि उसको पढ़ाने में आपकी मदद करते हैं।

TESS-India के वीडियो संसाधनों को *TESS-India* की वेबसाइट *http://www.tess-india.edu.in/* पर ऑनलाइन देखा जा सकता है या डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त आप इन वीडियो को सीडी या मेमोरी कार्ड में लेकर भी देख सकते हैं।

संस्करण *2.0* *LL03v1*
Madhya Pradesh

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है: http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/

TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

यह इकाई इस बारे में है कि बोलने और सुनने के सार्थक अवसर प्रभावी कक्षाकक्ष अध्यापन और शिक्षण में किस प्रकार योगदान देते हैं।

अपने विद्यार्थियों के बोलने और सुनने के कौशल के विकास के लिए आप विभिन्न गतिविधियों की योजना बना पाएगे और उनका मूल्यांकन कर सकेंगे। आप उन तरीकों पर भी विचार कर सकेंगे, जिनके द्वारा अपने विद्यार्थियों के विचार सुनकर आपको उनके सीखने का आकलन करने और अपने भावी पाठों की योजना बनाने में मदद मिल सकती है।

इस इकाई से आप क्या सीख सकते हैं

- कक्षाकक्ष में विद्यार्थियों की परस्पर बातचीत की उपयोगिता एवं महत्व।
- बोलने और सुनने की गतिविधियों में चित्रों का उपयोग करना।
- किस प्रकार विद्यार्थियों की बातचीत का उपयोग उनकी समझ और प्रगति के मूल्यांकन के एक साधन के रूप में करें, ताकि उसके अनुसार अपनी अध्यापन योजनाओं में बदलाव कर सकें।

यह तरीका क्यों महत्वपूर्ण है

बोलना और सुनना सभी शैक्षणिक क्षेत्रों में अध्यापन और शिक्षण के केंद्र में होते हैं। बोलना भाषा का आधार है। छोटे बच्चे पढ़ना और लिखना शुरू करने से बहुत पहले ही सुनने और बोलने लगते हैं। वे सीखते हैं कि बोलकर वे अपनी ज़रूरतों और इच्छाओं को व्यक्त कर सकते हैं, वस्तुओं के बारे में जान सकते हैं और कल्पनाशील, अन्वेषक खेल में शामिल हो सकते हैं। बच्चों को यह अवसर चाहिए होता है कि उनकी बात सुनी जाए और उन्हें विभिन्न सन्दर्भों में अलग अलग विषयों के बारे में बोलने का अवसर दिया जाए, ताकि उनका भाषायी कौशल विकसित हो सके, जिससे उनकी स्कूली उपलब्धियों में भी वृद्धि होगी।

1 बोलना और सीखना

पारंपरिक कक्षाओं में, शिक्षक ही ज्यादातर समय बोलते हैं। हालांकि सीखने के प्रति विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में तब उल्लेखनीय रूप से सुधार होता है, जब वे अपनी स्वयं की बातचीत के द्वारा, सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होते हैं।

विचार कीजिए

- आपके अनुसार सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थियों का 'सक्रिय रूप से शामिल' होने का क्या अर्थ है? क्या यह सिर्फ शिक्षक के प्रश्नों का उत्तर देने तक सीमित है या यह उससे कुछ अधिक है?
- आपको कैसे पता चलता है कि आपके विद्यार्थी कक्षाकक्ष में अपने शिक्षण में 'सक्रिय रूप से शामिल' हैं या नहीं?

सीखने में व्यक्ति के मौजूदा ज्ञान, कौशल और अनुभवों में वृद्धि करना और नए दृष्टिकोण प्राप्त करना शामिल होता है। बातचीत इस प्रक्रिया में मुख्य भूमिका निभाती है, क्योंकि इससे विद्यार्थियों को उनके विचारों को स्पष्ट करने, वे क्या नहीं समझ सके हैं, यह बताने, प्रश्न करने, नए विचारों को जानने और शिक्षकों व सहपाठियों के साथ आपसी बातचीत के द्वारा नई बातें सीखने में मदद मिलती है।

इस पहली गतिविधि में, आप सीखने के लिए बातचीत के महत्व पर विचार करेंगे।

गतिविधि 1: सीखने के लिए बातचीत

यदि संभव हो, तो यह गतिविधि अपने किसी सहकर्मी के साथ करें।

पहले संसाधन 1, 'सीखने के लिए बातचीत करना' पढ़ें। जब आप इसे पूरा कर लेते हैं, तब ध्यानपूर्वक निम्नलिखित दो अंश पढ़ें:

- यहाँ तक कि साक्षरता और गणना के सीमित कौशल वाले नन्हें विद्यार्थी भी उच्चतर श्रेणी के चिंतन कौशलों का प्रदर्शन कर सकते हैं, बशर्ते कि उन्हें दिया जाने वाला कार्य उनके पहले के अनुभव पर आधारित और आनंदप्रद हों। उदाहरण के लिए विद्यार्थी तस्वीरों, रेखाचित्रों या वास्तविक वस्तुओं से किसी कहानी, पशु या आकृति के बारे में पूर्वानुमान लगा सकते हैं। विद्यार्थी भूमिका निभाते समय कठपुतली या पात्र की समस्याओं के बारे में सुझावों और संभावित समाधानों को सूचीबद्ध कर सकते हैं।
- जो कुछ आप विद्यार्थियों को सिखाना चाहते हैं, उसके इर्दगिर्द पाठ की योजना बनायें और इस बारे में सोचें। कि आप किस प्रकार की बातचीत को विद्यार्थियों में विकसित होते देखना चाहते हैं।

विचार कीजिए

संसाधन 1 बताता है कि विद्यार्थी कहानी के बारे में, किसी जानवर के बारे में या आकृति के बारे में चित्रों, रेखाचित्रों या वास्तविक वस्तुओं से अनुमान लगा सकते हैं, और विद्यार्थी किसी नाटिका में कठपुतली या पात्र की समस्याओं के बारे में सुझाव और संभावित समाधान दे सकते हैं।

- इस बात के एक उदाहरण के बारे में सोचें कि इन विचारों को किस प्रकार कक्षा दो में लागू किया जा सकता है। आप किन संसाधनों, विषयों या गतिविधियों का उपयोग करेंगे?
- इस बात के एक उदाहरण के बारे में सोचें कि इन विचारों को किस प्रकार कक्षा सात में लागू किया जा सकता है। इसके लिए कौन-से संसाधन, विषय या गतिविधियाँ उपयुक्त होंगी?

इन प्रश्नों पर विचार करें: 'इसके बाद क्या होगा?', 'क्या हमने इसे पहले देखा हैं? क्या यह हो सकता है?' और 'आपके अनुसार वह क्यों है?'

- कक्षा की कुछ गतिविधियों के बारे में सोचें, जिनमें आप कक्षा एक में ये प्रश्न कर सकेंगें।
- कक्षा की कुछ गतिविधियों के बारे में सोचें, जिनमें आप कक्षा छः में ये प्रश्न कर सकेंगें।

अब अपने पिछले पाठों के बारे में सोचें। क्या आप पहचान सकते हैं कि किस समय आपके विद्यार्थियों ने खोजपरक बातचीत की थी? इस तरह की बातचीत किन विषयों या बातों से संबंधित थी?

सीखने के लिए बातचीत करना सभी आयुवर्गों के विद्यार्थियों के लिए मूल्यवान होता है। विद्यार्थियों को एक उद्देश्यपूर्ण रूप में बात करने के जितने ज्यादा अवसर दिए जाएंगे, वे विचारपूर्वक बोलने और सुनने में उतने ही अधिक कुशल बनेंगे।

वीडियो: सीखने के लिए बातचीत करना

2 विद्यार्थियों की बातचीत में संकेत के रूप में चित्रों का उपयोग करना

केस स्टडी एक पढ़ें, जिसमें बताया गया है कि किस प्रकार एक शिक्षिका चित्रों का उपयोग करके अपने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करती है कि उन्हें जो बातें मालूम हैं, वे उनके बारे में बताएँ।

> केस स्टडी 1: कक्षा में बातचीत को प्रोत्साहित करने के लिए चित्रों का उपयोग करना
>
> *सुश्री प्रियंका मध्य प्रदेश के एक ग्रामीण स्कूल में कक्षा एक की शिक्षिका हैं। यहाँ वे बताती हैं कि किस प्रकार वे कक्षा में बातचीत को आगे बढ़ाने के लिए परिचित दृश्यों वाले चित्रों का उपयोग करती हैं।*
>
> मैं अपने विद्यार्थियों को बातचीत के लिए प्रोत्साहित करने के लिए चित्रों [चित्र 1 देखें] का उपयोग करती हूँ। स्थानीय कलाकारों द्वारा बनाए गए ये चित्र टिकाऊ कागज़ की बड़ी शीटों पर छापे गए हैं और प्लास्टिक से ढंके हुए हैं। पहले चित्र का शीर्षक है 'मेरा गाँव' और दूसरे का शीर्षक है 'कृषि'।

चित्र 1 दो चित्र – 'मेरा गाँव' (बायाँ) और 'कृषि' (दायाँ)
–जिनका उपयोग सुश्री प्रियंका अपने विद्यार्थियों को बातचीत के लिए प्रोत्साहित करने के लिए करती हैं।

सबसे पहले मैं दीवार पर चित्र लगाती हूँ। मैं उनका ज़िक्र नहीं करती और अपने विद्यार्थियों को उनके समय में इन पर ध्यान देने और इन्हें देखने देती हूँ। अगले एक या दो दिनों तक मैं अपने विद्यार्थियों को इन चित्रों के बारे में एक-दूसरे से बात करते और इनके विवरणों के बारे में चर्चा करते हुए सुनती हूँ।

इसके बाद मैं 20-मिनट का एक सत्र आयोजित करके हर दिन विद्यार्थियों के एक समूह के साथ चित्रों पर चर्चा करती हूँ। कभी-कभी मैं इस काम के लिए समूह को बाहर भी ले जाती हूँ। मैं शेष कक्षा को उस समय व्यस्त रखने के लिए कोई और काम देती हूँ।

मैं पहले से ही कई प्रश्नों की सूची बनाकर रखती हूँ। कुछ प्रश्न सरल वर्णनों को प्रकाश में लाने के लिए होते हैं, जबकि अन्य प्रश्न ज्यादा खोजपरक बातचीत को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से, तर्क, अनुमान और बातों को विद्यार्थियों के स्वयं के अनुभवों से जोड़ने के रूप में होते हैं। यहाँ प्रत्येक प्रकार के प्रश्नों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं।

- यह चित्र किसका है?
- क्या आप वर्णन कर सकते हैं कि आपको चित्र में क्या दिखाई दे रहा है?
- लोग क्या कर रहे हैं?
- क्या आपने कभी ये खेल खेले हैं? क्या आप बता सकते हैं कि इन्हें कैसे खेला जाता है?
- क्या आपने कभी खेतों में अपने परिवार की मदद की है?
- खेत से प्राप्त होने वाले अनाजों से बनने वाला आपका पसंदीदा खाद्य कौन-सा है? वह कैसे बनाया जाता है?
- इस चित्र का कौन-सा भाग आपको सबसे अच्छा लगा? ऐसा क्यों?

मैं विद्यार्थियों की बातों में कोई सुधार या टोकाटाकी किए बिना हर विद्यार्थी की बात ध्यान से सुनती हूँ। मैं जोर देती हूँ कि बाकी विद्यार्थी भी ध्यान से सुनें। मेरे विद्यार्थी जो देखते और जानते हैं, उसके बारे में बोलने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने से मुझे उनके बारे में बहुत कुछ सीखने को मिलता है। इससे मुझे उनकी क्षमता का आकलन करने और उन्हें आगे सहायता करने और बढ़ाने के तरीकों के बारे में सोचने में मदद मिलती है।

मेरे कुछ विद्यार्थी बोलने में शर्माते हैं, लेकिन वे अपने सहपाठियों की बातें अवश्य ध्यान से सुनते हैं। मैं उन्हें सरल प्रश्न करने की कोशिश करती हूँ, जिनके जवाब एक शब्द में या इशारे से या सिर हिलाकर दे सकते हैं, जिससे मुझे पता चले कि वे मेरी बात समझ गए हैं।

मैं हमेशा अपने विद्यार्थियों के सामने बेहतर ढंग से बोलने और सुनने की कोशिश करती हूँ। मैं स्पष्ट रूप से बात करती हूँ, उत्तर देने वालों के साथ दृष्टि संपर्क बनाती हूँ तथा आगे और प्रश्न करती हूँ, जिससे उनके उत्तरों के प्रति मेरी रुचि का संकेत मिलता है।

विचार कीजिए

- सुश्री प्रियंका के कौन-से प्रश्न उनके विद्यार्थियों को खोजपरक बातचीत के लिए प्रोत्साहित करते हैं?
- वे किस तरह सुनिश्चित करती हैं कि उनके सभी विद्यार्थी इस गतिविधि में शामिल हैं?
- सुश्री प्रियंका के पास वक्ताओं और श्रोताओं के रूप में अपने विद्यार्थियों का मूल्यांकन करने के कौन-से अवसर हैं?

आपके विद्यार्थी संभवतः विविध सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषाई पृष्ठभूमियों वाले होंगे। आपके द्वारा कक्षा में शामिल की जाने वाली बोलने और सुनने की गतिविधियाँ आपके विद्यार्थियों द्वारा स्कूल में लाए जाने वाले विविध तरह के पूर्व ज्ञान पर आधारित होनी चाहिए। यह विशिष्ट रूप से उन विद्यार्थियों के लिए ज्यादा लागू होता है, जिनके घर की भाषा स्कूल की भाषा से अलग है। इस बात पर ध्यान दें कि किस प्रकार केस स्टडी 1 में उपयोग किए गए चित्र संकेत सुश्री प्रियंका के सभी विद्यार्थियों के परिचित दृश्यों वाले थे। इस बात का ध्यान रखें कि जो विद्यार्थी चुप रहते हैं, वे भी सुनकर, सोचकर और सीखकर इस गतिविधि में भाग ले रहे होते हैं।

निम्नलिखित गतिविधि में आप अपने विद्यार्थियों को बोलने और सुनने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए चित्रों का उपयोग करेंगे।

गतिविधि 2: चित्र-आधारित समूह चर्चा

इस गतिविधि के लिए आप अपनी पाठ्यपुस्तक से या अपने स्कूल अथवा समुदाय के अन्य स्रोतों से कोई भी चित्र ले सकते हैं।

विचारों के लिए केस स्टडी 1 का उपयोग करके, एक पाठ की योजना बनाएँ, जिसमें आप एक चित्र या चित्रों की श्रृंखला के द्वारा अपने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हैं कि वे जो देखते या कल्पना करते हैं, उसे अपने ज्ञान और अनुभव से जोड़कर उसके बारे में बताएँ।

पाठ की योजना बनाने से पहले, निम्नलिखित कार्य करें:

- इस बारे में सोचें कि आप इस गतिविधि को व्यवस्थित कैसे करेंगे। इस पर विचार करें कि क्या इसमें जोड़ियाँ बनाई जाएँगी, छोटे समूह होंगे या पूरी कक्षा एक साथ रहेगी, तथा क्या यह गतिविधि कक्षा के अंदर होगी या बाहर।
- अपने किसी साथी शिक्षक के साथ मिलकर इस बारे में सोचें कि आप अपने विद्यार्थियों से किस तरह के प्रश्न कर सकते हैं।

निम्नलिखित प्रश्न चित्र 2 में प्रदर्शित चित्र पर आधारित हैं। आपके द्वारा उपयोग किए जाने वाले चित्रों और पढ़ाई जाने वाली कक्षा की उम्र के अनुसार आपको अन्य प्रश्न तैयार करने होंगे:

- वर्णनात्मक प्रश्न:
  - आपके विचार से इस चित्र में क्या हो रहा है?
  - बच्चे क्या कर रहे हैं?
  - इसमें कितनी लडकियां हैं? कितने लड़के हैं? कितने वयस्क हैं?
  - आप कौन-से रंग देख सकते हैं?
- तार्किक प्रश्न:
  - कुछ वयस्कों की ओर संकेत करें और पूछें कि 'आपके अनुसार वे यहाँ क्यों हैं और वे एक-दूसरे से क्या बात कर रहे हैं?'
  - कुछ बच्चों की ओर संकेत करें और पूछें कि 'आपको क्या लगता है कि वे एक-दूसरे से क्या बात कर रहे हैं?'
  - अभी वातावरण या मौसम कैसा है? आपको कैसे पता?
  - आपके अनुसार यह दिन का कौन-सा समय है? क्यों?
  - क्या वहाँ शान्ति है या शोर हो रहा है? आप किस तरह बता सकते हैं?
  - क्या आपको लगता है कि जो लड़का कुछ खा रहा है, वह अपनी जगह से उस रस्सी कूदने वाली लड़की को देख सकता है?
  - बच्चे दुखी हैं या खुश हैं? आप किस तरह बता सकते हैं?
  - क्या उस लड़की को अपने कान में वह तेज़ शोर पसंद है?
- अनुमान के प्रश्न:
  - जब लड़का अपनी गुलेल चलाएगा, तो क्या होगा?
  - क्या लड़का उस गेंद को पकड़ लेगा?
  - आपके विचार में आगे क्या होगा?

- चित्र को विद्यार्थियों के निजी अनुभवों से जोड़ना:
  - क्या आपके स्कूल का परिसर ऐसा दिखता है?
  - क्या आप ये खेल खेलते हैं?
  - आपको कौन-से खेल खेलना पसंद है?
  - यदि आप उस मैदान में होते तो आप क्या करना पसंद करते?

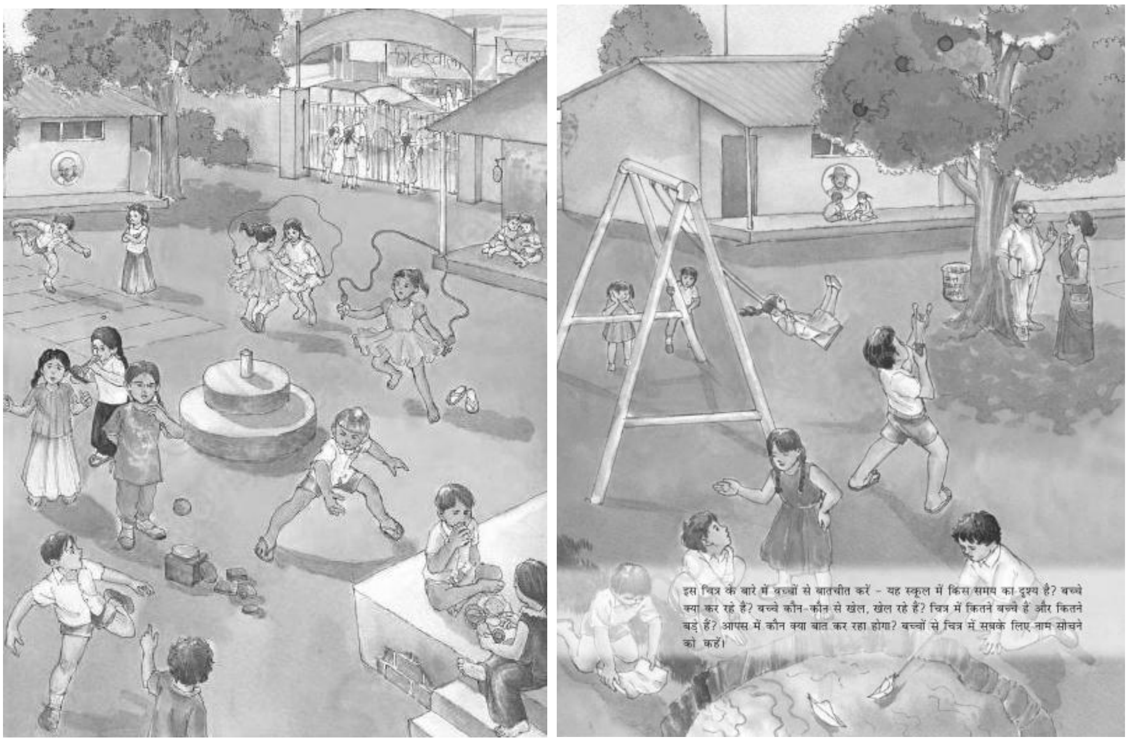

चित्र 2 विद्यार्थियों को बात करने के लिए आगे बढ़ाने वाले दो चित्र।

विचार कीजिए

अपनी कक्षा के साथ यह गतिविधि पूरी कर लेने के बाद, निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:

- आपने किस तरह के प्रश्न किए थे?
- अपने विद्यार्थियों के उत्तरों के विस्तार और गुणवत्ता के बारे में आपने किस बात पर ध्यान दिया?
- यह गतिविधि करते समय आपके विद्यार्थी कौन-से कौशल सीख रहे थे? (उदाहरण के लिए इनमें दूसरों की बात सुनना, प्रश्नों के उत्तर देना, अपने अनुभवों के बारे में बताना या सोचने और तर्क करने के लिए भाषा का उपयोग करना शामिल हो सकते हैं।)
- क्या उनकी कोई बातें उनके पाठ्यक्रम के विषयों जैसे गणित, भूगोल या विज्ञान से संबंधित थीं?

अपनी अध्यापन योजनाओं और गतिविधियों में प्रश्नों के उपयोग के बारे में अधिक जानकारी के लिए संसाधन 2, 'सोचने की प्रक्रिया को बढ़ावा देने के लिए प्रश्न करना' देखें।

वीडियो: सोचने की प्रक्रिया को बढ़ावा देने के लिए प्रश्नों का उपयोग करना

अगली गतिविधि में आप अपने विद्यार्थियों को कहानियाँ बनाने और कक्षा में सुनाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए चित्रों का उपयोग करेगे।

गतिविधि 3: चित्रों से कहानी

चित्र 3 के चारों चित्र देखें। इन चित्रों से संबंधित एक कहानी बनाएँ। यह आपकी इच्छा के अनुसार छोटी या बड़ी हो सकती है, और इसमें संवाद भी हो सकते हैं।

अपनी कहानी किसी सहकर्मी को सुनाएँ। उन्हें यह कैसी लगी?

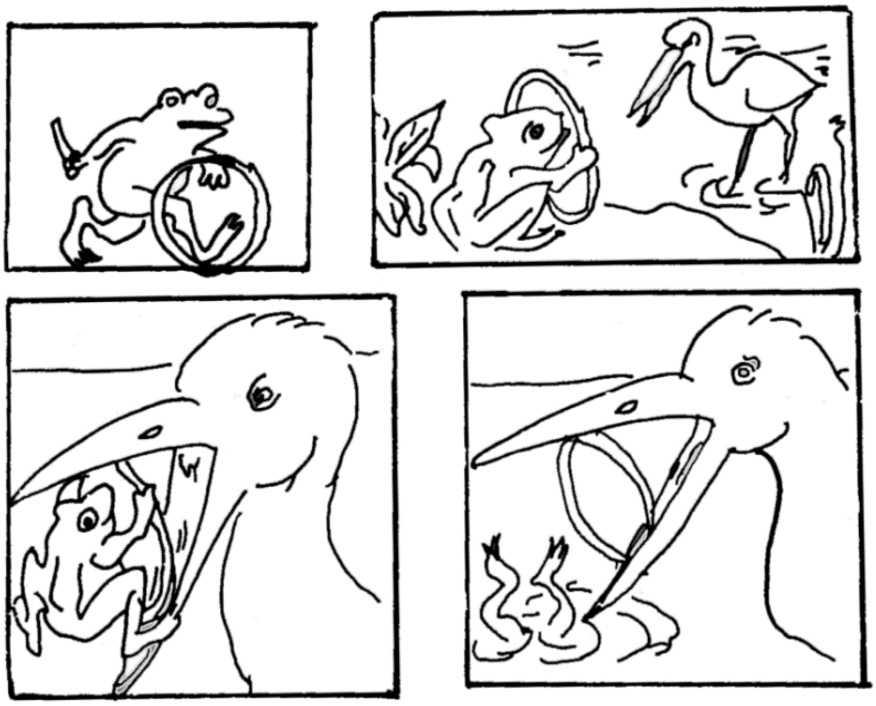

चित्र **3** एक कहानी बनाने के लिए चित्रों का उपयोग करना।

अब अपने विद्यार्थियों के साथ एक चित्र-आधारित कहानी लेखन/वाचन की गतिविधि करें। इस उद्देश्य के लिए आप चित्रों की किसी भी श्रृंखला का उपयोग कर सकते हैं - किसी पुस्तक से पत्रिका या अखबार से, अथवा आपके द्वारा, आपके मित्र या सहकर्मी के द्वारा बनाए गए चित्र।

सबसे पहले चित्र 3 में दिए गए चित्र अनुक्रम के बारे में अपनी खुद की लघुकथा सुनाकर इस गतिविधि का अभ्यास करें। इसके बाद अपने विद्यार्थियों को जोड़ियों या समूहों में व्यवस्थित करने और उन्हें इन्हीं चित्र संकेतों का उपयोग करके अलग अलग कहानियाँ तैयार करने को कहें। जिन विद्यार्थियों के घर की भाषा एक समान है, उन्हें एक ही जोड़ी या समूह में रखें, ताकि वे उसी भाषा में कहानी सुनाने की तैयारी कर सकें। यदि संभव हो, तो उन्हें अलग अलग आवाज़ों और हावभावों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें।

जब सब लोग तैयार हो जाएँ, तो विद्यार्थियों से अपनी कहानी दूसरी जोड़ी या समूह को अथवा पूरी कक्षा को सुनाने को कहें। घर की (स्थानीय भाशा) भाषा की कहानियों का अनुवाद किस प्रकार स्कूल की भाषा में भी किया जा सकता है, इसके तरीकों के बारे में चर्चा के लिए समय दें।

विचार कीजिए

- इस गतिविधि से आपके विद्यार्थियों को कौन-से भाषा विकास संबंधी अवसर मिले?
- आपने कैसे सुनिश्चित किया कि कक्षा का प्रत्येक विद्यार्थी इसमें शामिल हुआ था?
- आप इसे पाठ्यक्रम के किसी विशिष्ट विषय जैसे इतिहास, के लिए किस प्रकार अनुकूलित कर सकते हैं?
- आप इस तरह की गतिविधि के द्वारा भाषा और विषय के ज्ञान का मूल्यांकन कैसे कर सकते हैं?

3 अपने अध्यापन की जानकारी पाने के लिए विद्यार्थियों की बातचीत का उपयोग करना।

विद्यार्थी अक्सर अपने शिक्षण के बारे में बात करते हैं। अब क्रियाकलाप 4 करके देखें।

गतिविधि 4: अपने विद्यार्थियों की बातचीत सुनना

एक शिक्षण संसाधन के रूप में विद्यार्थियों की बातचीत की संभावना को समझने के लिए, अपने विद्यार्थियों की किसी बातचीत को चुपचाप सुनें। यदि संभव हो, तो एक से ज्यादा बार ऐसा करें।

देखें कि क्या आप आपने विद्यार्थियों को निम्नलिखित में से कुछ करते हुए सुना सकते हैं:

- किसी बात पर ध्यान देना।
- इसके बारे में ध्यान से सोचना।
- अपने अवलोकन एक-दूसरे को बताना।
- अपने अवलोकनों और अनुभवों को एक सुव्यवस्थित तरीके से रखना।
- एक-दूसरे के अवलोकनों और अनुभवों को चुनौती देना।
- अवलोकनों और अनुभवों के आधार पर तर्क देना।
- अनुमान लगाना।
- किसी पिछले अवलोकन या अनुभव को याद करना।
- किसी दूसरे के अनुभव या भावनाओं की कल्पना करना।
- अपनी खुद की भावनाओं या अनुभवों को याद करना।

विचार कीजिए

- क्या आपने किन्हीं ऐसे विद्यार्थियों की बातें सुनीं, जो कुछ सीखने की प्रक्रिया में थे और बातचीत के द्वारा अपने शिक्षण को एकत्रित कर रहे थे?
- आप अपने अध्यापन के संसाधन के रूप में इस तरह की बातचीत का उपयोग कैसे कर सकते हैं?

एक शिक्षक होने के नाते, एक अच्छा श्रोता होना महत्वपूर्ण है। अक्सर आप अपने विद्यार्थियों की जिन बातों को सुनते हैं, उनके तत्वों को आप अपने आगे के पाठों की योजनाओं में शामिल कर सकते हैं।

अब केस स्टडी 2 में दो उदाहरण पढ़ें। इन्हें पढ़ते समय इस बारे में सोचें कि शिक्षक जो सुनते हैं, उसका उपयोग अपने अध्यापन में सहायता के लिए किस प्रकार करते हैं। जब आप इसे पूरा कर लेते हैं, तो अपने विद्यार्थियों को सुनने का अगला अवसर खोजें। उनकी बातचीत के कौन-से पहलू आपकी आगामी कक्षा गतिविधियों के लिए उपयोगी हो सकते हैं?

केस स्टडी 2: विद्यार्थियों की वार्ता से मदद लेना

सुश्री भूमि मध्य प्रदेश में कक्षा दो की शिक्षिका हैं।

एक दिन मैं बाहर बैठकर खाना खा रही थी कि तभी मैंने विद्यार्थियों को ऊंची आवाज़ में बहस करते हुए सुना। मैंने दखल देने के बजाय, ध्यान से सुनने का फैसला किया। चार विद्यार्थी एक कविता के बारे में बहस कर रहे थे, जो मैंने उन्हें उस दिन सुबह पढ़कर सुनाई थी। जब मैं कविता पढ़ रही थी, तो विद्यार्थियों ने चुपचाप वह कविता सुनी थी। इसलिए मैंने यह मान लिया था कि सब लोग उसे समझ गए हैं। लेकिन जब मैंने अपने विद्यार्थियों को बहस करते हुए सुना, तब मुझे अहसास हुआ कि उनमें से ज्यादातर ने उसे बिलकुल ही गलत अर्थ में समझा था। कविता के मुख्य शब्दों के लिए उनके द्वारा की गई अलग अलग व्याख्या को सुनकर मुझे यह बात पता चली।

मैंने अगले दिन उन्हें यह कविता फिर से सुनाने और इसके बारे में उनकी समझ को फिर से जानना तय किया। इस घटना ने मुझे सिखाया कि जब हम पाठ्यपुस्तक-आधारित अन्य पाठ पढ़ते हैं, तो मुझे इस बात को जाँचने के लिए ज्यादा समय देना चाहिए कि क्या कोई अपरिचित शब्दावली है और यदि ऐसा है, तो उसे ध्यानपूर्वक समझाना चाहिए। मैं उसके बाद से नियमित रूप से ऐसा कर रही हूँ और मैंने इसके फायदे भी देखे हैं।

श्रीमती सरोज मध्य प्रदेश में कक्षा पाँच की शिक्षिका हैं।

मैं अपने विद्यार्थियों के लेखन कार्य में उनसे जिन बातों की उम्मीद करती थी, वे बिंदु मैं उन्हें हूबहू बताती थी। इससे उनके टेक्स्ट (पाठ्य वस्तु)

> एक समान हो जाते थे।
>
> एक दिन सुबह कक्षा से पहले, मैंने कई विद्यार्थियों को आपस में बातें करते हुए सुना। मुझे अचंभा हुआ कि उन कुछ मिनटों में ही उन्होंने कई तरह के विषयों पर चर्चा की, उन्हें समझाया, प्रश्न किए, तर्क दिए और अनुमान लगाया। उनके पास कई रोचक विचार थे।
>
> उनकी बातें सुनने के परिणामस्वरूप मुझे अहसास हुआ कि यदि मैं अपने विद्यार्थियों को उनके मौखिक भाषा संसाधनों, अनुभवों और रुचियों का इस तरह उपयोग करने दूँ, तो वे और भी ज्यादा रचनात्मक और सार्थक रूप से लिख सकेंगे।
>
> अब मैं अपने विद्यार्थियों को चार या पाँच के समूहों में रखती हूँ और उन्हें चर्चा करने के लिए एक विषय देती हूँ व इसके बाद उन्हें एक व्यक्तिगत लेखन असाइनमेंट (सत्रीय कार्य) के लिए आमंत्रित करती हूँ। अभी तक, उन्होंने स्कूल के बाहर वाली चाय की दुकान, एक स्थानीय त्यौहार, हाल ही में हुए एक खेल आयोजन, और आस-पास के पेड़ों जैसे विषयों के बारे में बात की है और लिखा है। कभी-कभी मैं अपने विद्यार्थियों को स्कूल के परिसर में भेजती हूँ और उनसे कहती हूँ कि वे वस्तुओं का अवलोकन करें, आपस में चर्चा करें और फिर उनके बारे में लिखें।

अंतिम गतिविधि में, आप एक समूह गतिविधि करवाएँ, जिसमें बोलना और लिखना शामिल होगा। मुख्य संसाधन 'समूह कार्य का उपयोग करना' आपके लिए उपयोगी हो सकता है।

गतिविधि 5: लेखन की तैयारी पूर्व समूह बातचीत का उपयोग करना
मार्गदर्शक के रूप में श्रीमती सरोज की केस स्टडी का उपयोग करके, एक पाठ तैयार करें, जिसमें आप अपने विद्यार्थियों को किसी विषय पर चर्चा करने और फिर उसके बारे में अकेले-अकेले लिखने के लिए आमंत्रित करेंगे। • अपनी कक्षा को चार, पाँच या छः के समूहों में बाँटें। • प्रत्येक समूह को चर्चा करने के लिए एक विषय दें। यह आपके विद्यार्थियों की उम्र और रुचियों पर निर्भर होगा। आप प्रेरणा के लिए प्रत्येक समूह को एक चित्र या अखबार की कटिंग दे सकते हैं। • दो या तीन विद्यार्थियों के साथ इस बात का नमूना दिखाएँ कि उन्हें किस तरह आपस में बात करनी चाहिए, उन्हें यह प्रदर्शित करके बताएँ कि उपयोगी खोजपरक प्रश्न किस तरह किए जाते हैं और उनके सहपाठियों के उत्तरों को किस तरह आदरपूर्वक सुनना चाहिए। • कक्षा का चक्कर लगाएँ और यदि आवश्यक हो, तो समूहों की मदद करें। इस अवसर का उपयोग करके अपने विद्यार्थियों के व्यवहार, भाषा में उनकी महारत और संबंधित विषय की उनकी समझ का अवलोकन करें। • चर्चा सत्र के बाद, अपने विद्यार्थियों से कहें कि उन्होंने जिस विषय पर चर्चा की है, वे उस पर एक संक्षिप्त निबंध लिखें। • कभी-कभी आप अपने विद्यार्थियों के निबंधों को रुचि के लिए अन्य सदस्यों में वितरित भी कर सकते हैं। • अंत में, आप अपने विद्यार्थियों के लेखन के मूल्यांकन के आधार पर आगे के पाठों की योजना बना सकते हैं।

सारांश

इस इकाई में आपको ऐसे अवसर तैयार करने के बारे में कुछ विचार दिए गए, जिनके द्वारा आपके विद्यार्थी सीखनें के लिए कक्षा में एक दूसरे से बात कर सकते हैं और सुन सकते हैं। इसमें यह दर्शाया गया है कि विषय के बारे में और भाषा कौशल के बारे में विद्यार्थियों की समझ और प्रगति की जानकारी प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों की चर्चा किस तरह मूल्यवान हो सकती है। ऐसी जानकारी आपके कक्षा अभ्यास और पाठों की योजना दोनों में योगदान कर सकती है। अपने विद्यार्थियों की बातचीत को सुनकर, आप पाठों की योजना इसके अनुरूप बना सकते हैं कि आप अपने विद्यार्थियों को क्या सिखाना चाहते हैं और उनकी सोच को किस प्रकार विकसित करना चाहते हैं, ताकि उनकी उपलब्धि में सुधार हो सके।

संसाधन

संसाधन 1: सीखने के लिए बातचीत करना

सीखने के लिए बातचीत क्यों जरूरी है

बातचीत मानव विकास का हिस्सा है, जो सोचने-विचारने, सीखने और विश्व का बोध प्राप्त करने में हमारी मदद करती है। लोग भाषा का इस्तेमाल तार्किक क्षमता, ज्ञान और बोध को विकसित करने के लिए औज़ार के रूप में करते हैं। अत:, विद्यार्थियों को उनके सीखने के अनुभवों के भाग के रूप में बात करने के लिए प्रोत्साहित करने का अर्थ होगा उनकी शैक्षणिक प्रगति का बढ़ना। सीखे गए विचारों के बारे में बात करने का अर्थ होता है:

- उन विचारों को परखा गया है।
- तार्किक क्षमता विकसित और सुव्यवस्थित है।
- जिससे विद्यार्थी अधिक सीखते हैं।

किसी कक्षा में रटा-रटाया दोहराने से लेकर उच्च श्रेणी की चर्चा तक विद्यार्थी वार्तालाप के विभिन्न तरीके होते हैं।

पारंपरिक तौर पर, शिक्षक की बातचीत का दबदबा होता था और वह विद्यार्थियों की बातचीत या विद्यार्थियों के ज्ञान के मुकाबले अधिक मूल्यवान समझी जाती थी। तथापि, पढ़ाई के लिए बातचीत में पाठों का नियोजन शामिल होता है ताकि विद्यार्थी इस ढंग से अधिक बात करें और अधिक सीखें कि शिक्षक विद्यार्थियों के पहले के अनुभव के साथ संबंध कायम करें। यह किसी शिक्षक और उसके विद्यार्थियों के बीच प्रश्न और उत्तर सत्र से कहीं अधिक होता है क्योंकि इसमें विद्यार्थी की अपनी भाषा, विचारों और रुचियों को ज्यादा समय दिया जाता है। हम में से अधिकांश कठिन मुद्दे के बारे में या किसी बात का पता करने के लिए किसी से बात करना चाहते हैं, और अध्यापक बेहद सुनियोजित गतिविधियों से इस सहज-प्रवृत्ति को बढ़ा सकते हैं।

कक्षाकक्ष में शिक्षण गतिविधियों के लिए बातचीत की योजना बनाना

शिक्षण की गतिविधियों के लिए बातचीत की योजना बनाना महज साक्षरता और शब्दावली के लिए नहीं है, यह गणित विज्ञान तथा अन्य विषयों के नियोजन का हिस्सा भी है। इसे समूची कक्षा में, जोड़ी कार्य या सामूहिक कार्य में, बाहर की गतिविधियों में, भूमिका पर आधारित गतिविधियों में, लेखन, वाचन, प्रायोगिक छानबीन और रचनात्मक कार्य में योजनाबद्ध किया जा सकता है।

यहाँ तक कि साक्षरता और गणना के सीमित कौशलों वाले नन्हें विद्यार्थी भी उच्चतर श्रेणी के चिंतन कौशलों का प्रदर्शन कर सकते हैं, बशर्ते कि उन्हें दिया जाने वाला कार्य उनके पहले के अनुभव पर आधारित और आनंदप्रद हो। उदाहरण के लिए, विद्यार्थी तस्वीरों, आरेखों की पुनरावृति या वास्तविक वस्तुओं से किसी कहानी, पशु या आकृति के बारे में पूर्वानुमान लगा सकते हैं। विद्यार्थी भूमिका निभाते समय कठपुतली या पात्र की समस्याओं के बारे में सुझावों और संभावित समाधानों को सूचीबद्ध कर सकते हैं।

जो कुछ आप विद्यार्थियों को सिखाना चाहते हैं, उसके इर्दगिर्द पाठ की योजना बनायें और इस बारे में सोचें, और साथ ही इस बारे में भी कि आप किस प्रकार की बातचीत को विद्यार्थियों में विकसित होते देखना चाहते हैं। कुछ प्रकार की बातचीत अन्वेषी होती है, उदाहरण के लिए: 'इसके बाद क्या होगा?', 'क्या हमने इसे पहले देखा है?', 'यह क्या हो सकता है?' या 'आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि वह यह है?' कुछ अन्य प्रकार की वार्ताएं ज्यादा विश्लेषणात्मक होती हैं, उदाहरण के लिए विचारों, साक्ष्य या सुझावों का आकलन करना।

इसे रोचक, मज़ेदार और सभी विद्यार्थियों के लिए संवाद में भाग लेना संभव बनाने की कोशिश करें। विद्यार्थियों को उपहास का पात्र बनने या गलत होने के भय के बिना दृष्टिकोणों को व्यक्त करने और विचारों का पता लगाने में सहज होने और सुरक्षित महसूस करने की जरूरत होती है।

विद्यार्थियों की वातार्लाप को आगे बढ़ाएं

शिक्षण के लिए वातार्लाप अध्यापकों को निम्न अवसर प्रदान करती है:

- विद्यार्थी जो कहते हैं उसे सुनना
- विद्यार्थियों के विचारों की प्रशंसा करना और उस पर आगे काम करना
- इसे आगे ले जाने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना।

सभी उत्तरों को लिखना या उनका औपचारिक आकलन नहीं करना होता है, क्योंकि वातार्लाप के जरिये विचारों को विकसित करना शिक्षण का महत्वपूर्ण हिस्सा है। आपको उनके शिक्षण को प्रासंगिक बनाने के लिए उनके अनुभवों और विचारों का यथासंभव प्रयोग करना चाहिए। सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी वातार्लाप खोजपरक होती है, जिसका अर्थ होता है कि विद्यार्थी एक दूसरे के विचारों की जांच करते हैं और चुनौती पेश करते हैं ताकि वे अपने प्रत्युत्तरों को लेकर विश्वस्त हो सकें। एक साथ बातचीत करने वाले समूहों को किसी के भी द्वारा दिए गए उत्तर को स्वीकार करने के लिए विवश नहीं किया जाना चाहिए। आप समूची कक्षा को व्यवस्थित करने में 'क्यों?', 'आपने उसका निर्णय क्यों किया?' या 'क्या आपको उस हल में कोई समस्या नजर आती है?' जैसे जांच वाले प्रश्नों के अपने प्रयोग के माध्यम से चुनौतीपूर्ण विचारशीलता को तैयार कर सकते हैं। आप विद्यार्थी समूहों को सुनते हुए कक्षा में घूम सकते हैं और ऐसे प्रश्न करके उनकी विचारशीलता को बढ़ा सकते हैं।

अगर विद्यार्थियों की वार्ता, विचारों और अनुभवों की कद्र और सराहना की जाती है तो वे प्रोत्साहित होंगे। बातचीत करने के दौरान अपने व्यवहार, सावधानी से सुनने, एक दूसरे से प्रश्न करने और बाधा न डालना सीखने के लिए अपने विद्यार्थियों की प्रशंसा करें। कक्षा में कमजोर बच्चों के बारे में सावधान रहें और उन्हें भी शामिल किया जाना सुनिश्चित करने के तरीकों पर विचार करें। कामकाज के ऐसे तरीकों को स्थापित करने में थोड़ा समय लग सकता है, जो सभी विद्यार्थियों को पूरी तरह से भाग लेने की सुविधा प्रदान करते हों।

विद्यार्थियों को प्रश्न करने के लिए प्रोत्साहित करें। अपनी कक्षा में ऐसा वातावरण तैयार करें जहाँ अच्छे चुनौतीपूर्ण प्रश्न पूछे जाते हैं और जहाँ विद्यार्थियों के विचारों को सम्मान दिया जाता है और उनकी प्रशंसा की जाती है। विद्यार्थी प्रश्न नहीं करेंगे अगर उन्हें उनके साथ किए जाने वाले व्यवहार को लेकर भय होगा या अगर उन्हें लगेगा कि उनके विचारों का मान नहीं किया जाएगा। विद्यार्थियों को प्रश्न करने के लिए आमंत्रित करना उनको जिज्ञासा दर्शाने के लिए प्रोत्साहित करता है, उनसे अपने शिक्षण के बार में अलग ढंग से विचार करने के लिए कहता है और उनके नजरिए को समझने में आपकी सहायता करता है।

आप कुछ नियमित समूह या जोड़े में कार्य करने, या शायद 'विद्यार्थियों के प्रश्न करने का समय' जैसी कोई योजना बना सकते हैं ताकि विद्यार्थी प्रश्न पूछकर सकें या स्पष्टीकरण मांग सकें। आप:

- अपने पाठ के एक भाग को 'अगर आपका प्रश्न है तो हाथ उठाएं' नाम रख सकते हैं।
- किसी विद्यार्थी को हॉट-सीट पर बैठा सकते हैं और दूसरे विद्यार्थियों को उस विद्यार्थी से प्रश्न करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं जैसे कि वे पात्र हों, उदाहरणत: पाइथागोरस या मीराबाई
- जोड़ों में या छोटे समूहों में 'मुझे और अधिक बताएं' खेल खेल सकते हैं
- मूल पूछताछ का अभ्यास करने के लिए विद्यार्थियों को कौन/क्या/कहां/कब/क्यों वाले प्रश्नो का ग्रिड दे सकते हैं
- विद्यार्थियों को कुछ डेटा (जैसे कि विश्व डेटा बैंक से उपलब्ध डेटा, उदाहरणत: पूर्णकालिक शिक्षा में बच्चों के प्रवेश या ठहराव का प्रतिशत या विभिन्न देशों में बाल मृत्युदर का प्रतिशत) दे सकते हैं, और उनसे उन प्रश्नों के बारे में सोचने के लिए कह सकते हैं जो आप इस डेटा के बारे में पूछ सकते हैं
- विद्यार्थियों के सप्ताह भर के प्रश्नों को सूचीबद्ध करते हुए प्रश्न दीवार का निर्माण कर सकते हैं।

जब विद्यार्थी प्रश्न करने और उन्हें मिलने वाले प्रश्नों के उत्तर देने के लिए मुक्त होते हैं तो उस समय आपको रुचि और विचारशीलता के स्तर को देखकर हैरानी होगी। जब विद्यार्थी अधिक स्पष्टता और सटीकता से संवाद करना सीख जाते हैं, तो वे न केवल अपनी मौखिक और लिखित शब्दावलियां बढ़ाते हैं, अपितु उनमें नया ज्ञान और कौशल भी विकसित होता है।

संसाधन 2: सोचने की प्रक्रिया को बढ़ावा देने के लिए प्रश्न करना

शिक्षक हमेशा अपने विद्यार्थियों से सवाल करते रहते हैं; सवालों का अर्थ ये होता है कि शिक्षक सीखने और सीखते रहने में अपने विद्यार्थियों की मदद कर सकते हैं। एक अध्ययन के अनुसार औसतन, एक शिक्षक अपने समय का एक-तिहाई हिस्सा विद्यार्थियों से सवाल करने में खर्च करता है (हेस्टिंग्स, 2003)। किए गए प्रश्नों में से, 60 प्रतिशत में तथ्यों को दोहराया गया था और 20 प्रतिशत प्रक्रियात्मक थे (हैती, 2012), जिनमें से ज्यादातर के उत्तर सही या गलत में थे। लेकिन क्या सिर्फ सही या गलत में उत्तर वाले सवाल करने से सीखने को प्रोत्साहन मिलता है?

विद्यार्थियों से कई अलग अलग तरह के सवाल पूछे जा सकते हैं। शिक्षक किस तरह के उत्तर और परिणाम पाना चाहते हैं, उनसे पता चलता है कि शिक्षक को किस तरह के सवाल करने चाहिए। शिक्षक आमतौर पर विद्यार्थियों से सवाल करते हैं, ताकि वे:

- जब कोई नया विषय या सामग्री प्रस्तुत की जाती है, तो वे विद्यार्थियों को इसे समझने के लिए मार्गदर्शन कर सकें
- बेहतर ढंग से सोचने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित कर सकें
- कोई त्रुटि दूर कर सकें
- विद्यार्थियों को प्रोत्साहित कर सकें
- समझ को जाँच सकें।

प्रश्नों का उपयोग आमतौर पर यह देखने के लिए किया जाता है कि विद्यार्थी क्या जानते हैं, इसलिए यह उनकी प्रगति का आकलन करने के लिए महत्वपूर्ण है। प्रश्नों का उपयोग प्रेरणा देने, विद्यार्थियों के सोचने के कौशल को बढ़ाने और जिज्ञासु मन विकसित करने में भी किया जा सकता है। उन्हें मोटे तौर पर दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है:

- निचले स्तर के प्रश्न, जिनसे कि तथ्यों का स्मरण और पहले सिखाया गया ज्ञान शामिल होता है, प्रायः उत्तर निर्धारित होता है। (हां या नहीं में उत्तर)
- उच्च स्तर के प्रश्न, जिनके लिए ज्यादा सोचने की ज़रुरत होती है। उनके लिए विद्यार्थियों को पहले किसी उत्तर से सीखी गई जानकारी को एक साथ रखने या तार्किक रूप से किसी दलील का समर्थन करने की ज़रुरत पड़ सकती है। उच्च स्तर के प्रश्न प्रायःopen ended (एक से अधिक प्रश्न) ज्यादा खुले सिरों वाले होते हैं।

खुले सवाल विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक पर आधारित, यथाशब्द जवाबों से परे सोचने को प्रोत्साहित करते हैं, इसलिए उत्तरों की श्रेणी खींच निकालते हैं। इनसे शिक्षकों को भी सामग्री के बारे में विद्यार्थी की समझ का आकलन करने में मदद मिलती है।

विद्यार्थियों को उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करना

कई शिक्षक एक सेकंड से भी कम समय में अपने प्रश्न का उत्तर चाहते हैं और इसलिए अक्सर वे खुद ही प्रश्न का उत्तर दे देते हैं या प्रश्न को दूसरी तरह से दोहराते हैं (हेस्टिंग्स, 2003)। विद्यार्थियों को केवल प्रतिक्रिया देने का समय मिलता है – उनके पास सोचने का समय ही नहीं होता! अगर आप उत्तर चाहने से पहले कुछ सेकंड इंतजार करते हैं तो विद्यार्थी को सोचने के लिए समय मिल जाएगा। इसका विद्यार्थियों की उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। प्रश्न को प्रस्तुत करने के बाद इंतजार करने से निम्नांकित में वृद्धि होती है:

- विद्यार्थियों के उत्तरों की लंबाई
- उत्तर देने वाले विद्यार्थियों की संख्या
- विद्यार्थियों के प्रश्नों की बारंबारता
- कम सक्षम विद्यार्थियों के पास से उत्तरों की संख्या
- विद्यार्थियों के बीच सकारात्मक संवाद।

आपका प्रोत्साहन महत्वपूर्ण है

आप दिए गए सभी उत्तरों को जितने सकारात्मक ढंग से स्वीकार करते हैं, विद्यार्थी भी उतना ही ज्यादा सोचना और कोशिश करना जारी रखेंगे। यह सुनिश्चित करने के कई तरीके हैं कि गलत उत्तरों और गलत धारणाओं को सुधार दिया जाए, और यदि एक विद्यार्थी के मन में कोई गलत विचार है, तो आप निश्चित रूप से यह मान सकते हैं कि कई अन्य विद्यार्थियों के मन में भी वही गलत धारणा होगी। आप निम्नलिखित का प्रयास कर सकते हैं:

- उत्तरों के उन हिस्सों को चुन सकते हैं, जो सही हैं और एक सहायक ढंग से विद्यार्थी से अपने उत्तर के बारे में थोड़ा और सोचने के लिए कह सकते हैं। यह ज्यादा सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करता है और आपके विद्यार्थियों की अपनी गल्तियों से सीखने में मदद करता है। निम्नलिखित टिप्पणी यह दर्शाती है कि आप ज्यादा मददगार ढंग से किस प्रकार से गलत उत्तर पर प्रतिक्रिया दे सकते हैं: 'आप वाष्पीकरण से बनते बादलों के बारे में सही थे लेकिन मुझे लगता है कि बारिश के बारे में आपने जो कहा है उसके बारे में थोड़ा और पता लगाने की जरूरत है। क्या आपमें से कोई और इस बारे में कुछ बता सकता है?'
- विद्यार्थियों से मिलने वाले सभी उत्तर श्यामपट पर लिखें, और विद्यार्थियों से पूछें कि वे इनके बारे में क्या सोचते हैं। उनके अनुसार कौन-से उत्तर सही हैं? कोई अन्य उत्तर देने का कारण क्या रहा होगा? इससे आपको यह समझने का एक मौक़ा मिलता है कि आपके विद्यार्थी किस तरीके से सोच रहे हैं और आपके विद्यार्थियों को भी एक मित्रवत तरीके से अपनी गलत धारणाओं को सुधारने का अवसर मिलता है।

सभी उत्तरों को ध्यान से सुनकर और आगे समझाने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करके उन्हें महत्व दें। उत्तर चाहे सही हो या गलत, लेकिन यदि आप विद्यार्थियों से अपने उत्तरों को विस्तार में समझाने को कहते हैं, तो अक्सर विद्यार्थी अपनी गलतियाँ खुद ही सुधार लेंगे, आप एक विचारशील कक्षा का विकास करेंगे और आपको वास्तव में पता चलेगा कि आपके विद्यार्थी कितना सीख गए हैं और अब किस तरह आगे बढ़ना चाहिए। यदि गलत उत्तर देने पर अपमान या सज़ा मिलती है, तो दोबारा शर्मिंदगी या डांट के डर से आपके विद्यार्थी कोशिश करना ही छोड़ देंगे।

उत्तरों की गुणवत्ता को बेहतर बनाना

यह महत्वपूर्ण है कि आप प्रश्नों का एक ऐसा क्रम अपनाने की कोशिश करें, जो सही उत्तर पर ख़त्म न होता हो। सही उत्तरों के बदले फॉलो-अप (पुनरावृत्ति) प्रश्न पूछने चाहिए, जो विद्यार्थियों का ज्ञान बढ़ाते है और उन्हें शिक्षक के साथ संलग्न होने का मौका देते है। यह आप इस तरह पूछकर कर सकते हैं:

- यह *कैसे* या *क्यों*
- उत्तर देने का एक और तरीका
- एक बेहतर शब्द
- किसी उत्तर को सही साबित करने के लिए प्रमाण
- संबंधित कौशल का एकीकरण
- उसी कौशल या तर्क का किसी नई स्थिति में अनुप्रयोग।

विद्यार्थियों की ज्यादा गहराई में जाकर सोचने में मदद करना और उनके उत्तरों की गुणवत्ता को बेहतर बनाना आपकी भूमिका का बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है। निम्नलिखित कौशल अधिक उपलब्धि हासिल करने में विद्यार्थियों की मदद करते हैं:

- प्रोत्साहन के लिए विद्यार्थियों को उचित संकेत देने की ज़रुरत पड़ती है – ऐसे संकेत जिनसे विद्यार्थियों को उनके प्रश्नों को विकसित करने और सुधार में मदद मिलती हो। उत्तर में सही क्या है, आप पहले इसे चुनकर इसके बाद जानकारी, आगे के प्रश्न तथा अन्य संकेत दे सकते हैं। ('तो अगर आप कागज के अपने हवाई जहाज के अंतिम सिरे पर वजन रखते हैं तो क्या होगा?')
- जांच-पड़ताल अधिक जानकारी पाने की कोशिश करने, एक अव्यवस्थित उत्तर को या आंशिक रूप से सही उत्तर को सुधारने की कोशिश में विद्यार्थी जो कहना चाहते हैं, उसे स्पष्ट करने में उनकी मदद करने से संबंधित है। ('तो इस सबका जो अर्थ है उसके बारे में आप मुझे और क्या बता सकते हैं?')
- फिर से ध्यान केंद्रित करना सही उत्तरों के आधार पर विद्यार्थियों के ज्ञान को उस ज्ञान से जोड़ने से संबंधित होता है, जो उन्होंने पहले सीखा है। यह उनकी समझ को विकसित करता है। ('आपकी बात सही है, लेकिन पिछले सप्ताह हम अपने स्थानीय पर्यावरण विषय के बारे में जो पढ़ रहे थे, यह उससे किस प्रकार संबंधित है?')
- प्रश्नों को अनुक्रित करना – इसका अर्थ है ऐसे क्रम में प्रश्न करना, जिन्हें सोच का विस्तार करने हेतु बनाया गया है। प्रश्नों के द्वारा विद्यार्थियों को सारांश बनाने, तुलना करने, समझाने और विश्लेषण करने की प्रेरणा मिलनी चाहिए। ऐसे प्रश्न तैयार करें, जिनसे विद्यार्थियों को सोचने की प्रेरणा मिले, लेकिन उन्हें इतनी ज्यादा भी चुनौती न दें कि प्रश्न का अर्थ ही खो जाए। ('स्पष्ट करें कि आप अपनी पहले की समस्या से किस प्रकार उबरे। उससे क्या फर्क पड़ा? आपको क्या लगता है आगे आपको किस चीज का सामना करने की जरूरत पड़ेगी?')
- सुनने से आप न केवल अपेक्षित उत्तर पर गौर करने में समर्थ होते हैं, बल्कि इससे आप असाधारण या नवाचारी उत्तरों के प्रति सतर्क भी होते हैं, जिसकी हो सकता है कि आपको अपेक्षा न रही हो। इससे यह भी दिखाई देता है कि आप विद्यार्थियों के विचारों को महत्व देते हैं और इसलिए इस बात की ज्यादा संभावना होती है कि वे सुविचारित उत्तर देंगे। इस तरह के उत्तर भ्रांतियों को चिह्नांकित कर सकते हैं, जिन्हें ठीक करने की जरूरत होती है अथवा वे एक नयी पहुंच दर्शा सकते हैं, जिन पर आपने विचार नहीं किया हो। ('मैंने इसके बारे में सोचा नहीं था। आप इस तरह से क्यों सोचते हैं इसके बारे में मुझे और जानकारी दें।')

एक शिक्षक के रूप में, आपको ऐसे प्रश्न करना चाहिए जो प्रेरित करने वाले और चुनौतीपूर्ण हों, ताकि आप अपने विद्यार्थियों से रोचक और खोजपरक उत्तर पा सकें। आपको उन्हें सोचने का समय देना चाहिए और आप सचमुच यह देखकर चकित रह जाएंगे कि आपके विद्यार्थी कितना कुछ जानते हैं और आप सीखने में उनकी प्रगति में कितनी अच्छी तरह मदद कर सकते हैं।

याद रखें कि प्रश्न यह जानने के लिए नहीं किए जाते कि शिक्षक क्या जानते हैं, बल्कि वे यह जानने के लिए किए जाते हैं कि विद्यार्थी क्या जानते हैं। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि आपको कभी भी अपने खुद के प्रश्नों का जवाब नहीं देना चाहिए! आखिरकार यदि विद्यार्थियों को यह पता ही हो कि वे आगे कुछ सेकंड तक चुप रहते हैं, तो आप खुद ही उत्तर दे देंगे, तो फिर उन्हें उत्तर देने का प्रोत्साहन कैसे मिलेगा?

अतिरिक्त संसाधन

- A selection of multilingual activities: http://mlenetwork.org/content/activities-early-grades-mother-tongue-l1-based-multilingual-education-programs
- The Rishi Valley rural education programme has published a number of different resources, some of which include pictures, poems in state and local languages: http://rishivalley.org/publications/list_of_titles.htm
- Some stories from Rishi Valley told in Hindi with downloadable written version and worksheets: http://rishivalley.org/rvite/Stories%20with%20Worksheets.htm
- Articles from Rishi Valley in Hindi and English about teaching Hindi to children: http://rishivalley.org/rvite/articles_teaching_hindi_children.htm

संदर्भ/संदर्भग्रंथ सूची

Barnes, D. (1992) *From Communication to Curriculum*, 2nd edn. Portsmouth, NH: Boynton/Cook-Heinemann.

Barnes, D. (2008) 'Exploratory talk for learning' in Mercer, N. and Hodgkinson, S. (eds) *Exploring Talk in School*. London: Sage Publications, pp.1–15.

Fisher, D., Frey, N. and Rothenberg, C. (2008) 'Procedures for classroom talk', Chapter 5 in *Content Area Conversations: How to Plan Discussion-Based Lessons for Diverse Language Learners*. Alexandria, VA: Association for Supervision and Curriculum Development. Available from:

http://www.ascd.org/publications/books/108035/chapters/Procedures-for-Classroom-Talk.aspx (accessed 28 October 2014).

Genishi, C. (undated) 'Young children's oral language development' (online), Reading Rockets. Available from: http://www.readingrockets.org/article/383 (accessed 28 October 2014).

Hastings, S. (2003) 'Questioning', *TES Newspaper*, 4 July. Available from: http://www.tes.co.uk/article.aspx?storycode=381755 (accessed 22 September 2014).

Hattie, J. (2012) *Visible Learning for Teachers: Maximising the Impact on Learning*. Abingdon: Routledge.

Higgins, S. (2001a) 'Developing thinking skills in the primary classroom' (online), paper presented at the Register of Primary Research Seminar Conference 'Raising Achievement: Developing Thinking Skills', Education-Line, 27 October. Available from: http://www.leeds.ac.uk/educol/documents/140953.htm (accessed 28 October 2014).

Higgins, S. (2001b) *Thinking Through Primary Teaching*. Cambridge, UK: Chris Kington Publishing.

McCandlish S. (2012) 'Taking a "slice" of the oral language pie: an approach for developing oral language in schools' (online). Available from: http://www.decd.sa.gov.au/northernadelaide/files/links/Taking_a_slice_of_Oral_Lan.pdf (accessed 28 October 2014).

Mercer, N. (1995) *The Guided Construction of Knowledge: Talk Amongst Teachers and Learners*. Clevedon: Multilingual Matters.

Neaum, S. (2012) *Language and Literacy for the Early Years*. London: Sage.

Prince, A.W. (undated) 'Promoting oral language development in young children' (online), Super Duper Publications. Available from: http://www.superduperinc.com/handouts/pdf/120_oral_language_development.pdf (accessed 28 October 2014).

Roskos, K.A., Tabors, P.O. and, Lenhart, L. A. (2009) *Oral Language and Early Literacy in Preschool: Talking, Reading, and Writing*, 2nd edn. International Reading Association. Available from: http://www.reading.org/Libraries/books/bk693-1-Roskos.pdf (accessed 28 October 2014).

Vygotsky, L.S. (1962) *Thought and Language*. Cambridge, MA: MIT Press. For a brief summary of Vygotsky's ideas on thought and language and the differences between his and Piaget's ideas, see: http://www.simplypsychology.org/vygotsky.html (accessed 28 October 2014).

Wells, G. (1993) 'Reevaluating the IRF sequence', *Linguistics and Education*, no. 5, pp. 1–37.

अभिस्वीकृतियाँ

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/)। नीचे दी गई सामग्री मालिकाना हक की है तथा इस परियोजना के लिए लाइसेंस के अंतर्गत ही उपयोग की गई है, तथा इसका Creative Commons लाइसेंस से कोई वास्ता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि इस सामग्री का उपयोग अननुकूलित रूप से केवल TESS-India परियोजना के भीतर किया जा सकता है और किसी भी बाद के OER संस्करणों में नहीं। इसमें TESS-India, OU और UKAID लोगो का उपयोग भी शामिल है।

इस यूनिट में सामग्री को पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति के लिए निम्न स्रोतों का कृतज्ञतापूर्ण आभार:

चित्र 1: बायाँ, ‘My Village’ और दायाँ, ‘Agriculture’, © स्थानीय कलाकार – अज्ञात (Figure 1: left, ‘My Village’ and right, ‘Agriculture, © local artists – unidentified)।

चित्र 2: एनसीईआरटी, रिमझिम,हिन्दी, कक्षा 1, अध्याय 2: http://ncert.nic.in/NCERTS/textbook/textbook.htm?ahhn1=2-23 (Figure 2: NCERT, Rimjhim, Hindi, Class 1, Chapter 2: http://ncert.nic.in/NCERTS/textbook/textbook.htm?ahhn1=2-23)।

चित्र 3: श्रेय: विद्या भवन शिक्षा संसाधन केंद्र, उदयपुर (Figure 2: Credit: Vidya Bhawan Education Resource Centre, Udaipur.)।

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन अध्यापक शिक्षकों, मुख्याध्यापकों, अध्यापकों और विद्यार्थियों के प्रति आभार प्रकट किया जाता है, जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।